Q. अवलोकन या परीक्षण विधी या वस्तुनिष्ठ प्रेक्षण से आप क्या समझते हैं? इसके गुण दोष का वर्णन करें?

A→ वस्तुनिष्ठ प्रेक्षण विधी को अवलोकन विधी भी कहा जाता है। वस्तुनिष्ठ प्रेक्षण विधी सभी विज्ञानों की एक सामान्य विधी है। इस विधि में अध्ययनकर्ता अध्ययन विषय को अपने सामने रखता है और उसके विभिन्न पक्षों का अवलोकन करता है। इसलिए इसे अवलोकन विधी भी कहा जाता है। वस्तुनिष्ठ प्रेक्षक अपनी ओर से कुछ नहीं करता वरन जो कुछ देखता है, वही बड़ी सच्चाई के साथ कहता है। एक बार प्राप्त तथ्यों को वह बार बार जाँचता है। उस विषय या घटना के अवलोकन के लिए वह दूसरे वैज्ञानिकों को भी बुलाता है ताकि उसकी कोई व्यक्तिगत बात विषय में प्रवेश न कर जाए। विज्ञानी अपने प्रेक्षणों के आधार पर उस घटना से संबंधित नियम बनाता है। फिर उसे सत्यापित कर सामान्य नियम का रूप देता है। वस्तुनिष्ठ प्रेक्षण में अध्ययनकर्ता का सामान्य दृष्टिकोण यह रहता है कि वह किसी आशा और आकांक्षा को अपने तथ्यों पर न थोपे।

वस्तुनिष्ठ प्रेक्षण दो प्रकार के होते हैं। एक वह जो

स्वाभाविक (natural) परिस्थिति में होता है। और इसका जो नियंत्रित परिस्थिति में होता है।

जबसे मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान हुआ वस्तुनिष्ठ प्रेक्षण ही इसकी विधी बन गई और इसके आप विभिन्न परिस्थितीयों में प्राणी के व्यवहारों का अध्ययन होने लगा। अतः वस्तुनिष्ठ प्रेक्षण विधी आप स्वाभाविक वातावरण में उद्दीपन और प्राणी की क्रियाओं के बीच के संबंधों का अध्ययन किया जाता है। तथा इन संबंधों पर आधारित प्राणी के व्यवहार के नियम बनाए जाते है। उदाहरण के लिए, "यदि जानना हो कि विभिन्न आयु के बच्चे सांप को देखकर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं। तो वस्तुनिष्ठ प्रेक्षक विभिन्न आयु के बच्चों जमा करेगा। उन सभी बच्चों की भूख प्यास, प्रसन्नता आदि को समान करने के बाद प्रेक्षक उनके बीच एक सांप को छोड़ देगा। और प्रत्येक बच्चों की प्रतिक्रियाओं को बड़ी तटस्थता से नोट करेगा। फिर प्राप्त दत्तों का विश्लेषण होगा कि किसी विशेष आयु के बच्चों में कौन कौन सी

प्रतिक्रियाएँ करें। अतीत से एक घटना चुनकर विवरण याद करने के लिए कहा जा सकता है। और जो बातें सभी घटनाओं के विवरण में सब ठीक होंगी उनको ही सत्य मान जाएगा। यदि कहीं कोई संदेह रह गया हो तो उस स्थिति को फिर से दुहराकर शंका समाधान कर सकते हैं। जोन्स और जोन्स के ऐसे ही एक अध्ययन से विदित बताया कि दो वर्ष के बच्चे साँप को खेलने की सामग्री समझते हैं। तीन वर्ष के बच्चे साँप से सतर्क व सावधान हो जाते हैं। और चार वर्ष के बच्चे इसके प्रति निश्चित भय की प्रतिक्रिया करते हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रेक्षण विधि में व्यक्ति की क्रियाओं का अवलोकन करते हैं। प्राणी की कुछ क्रियाओं को बाहर से देखा जा सकता है। जैसे, हँसना, रोना, खाना इत्यादि इन्हें बाह्य व्यवहार कहते हैं। जिन्हें प्रेक्षक खुली आँखों से देखता और पाता है। कुछ क्रियाएँ शरीर के आंतरिक अंगों की होती हैं। जैसे, हृदय की धड़कन, रक्त चाप, पाचन क्रिया, श्वसन क्रिया आदि। इन्हें आंतरिक व्यवहार कहते हैं। इन आंतरिक क्रियाओं को प्रेक्षक सूक्ष्म यंत्रों की मदद से ज्ञात करता है।

Note - उत्तर शेष Guess Paper से देख लें।